नाम- अरुणा प्रीति पन्ना
कक्षा - 1st Year
Sec- 'A'
सत्र - 2021-2023

स्वतंत्रता दिवस

15 अगस्त 1947 का दिन भारतीय इतिहास में एक स्वर्णिम दिन माना गया है। यह वही ऐतिहासिक दिवस है जब भारत वर्ष अंग्रेजों के 200 वर्षों की गुलामी से आजाद हुआ था। और इसी ऐतिहासिक दिन के उपलक्ष्य में हम भारतवासी प्रत्येक वर्ष स्वतंत्रता दिवस मनाते हैं।

हमारे भारत देश को आजाद हुए 74 वर्ष होने को हैं। अंग्रेजों की गुलामी से मुक्त, आजाद भारत हमें मिला, वह हमें यूँ ही नहीं मिला। इस गौरवमय दिन को पाने के लिए कई वीर सपूतों ने अपने प्राण त्याग किए। जब सारी दुनिया सोती थी तो हमारा भारतवर्ष जागता था और आजादी की लड़ाईयाँ लड़ता था। महात्मा गाँधी, सुभाषचन्द्र बोस, रानी लक्ष्मीबाई, तांत्या टोपे आदि ने स्वतंत्र भारत का एक स्वप्न देखा और उस स्वप्न को पूर्ण करने के लिए उन्होंने अपने प्राणों की आहुति दे दी। और अपने अमूल्य जीवन के बदले हमें यह मूल्यवान आजादी दे गए।

वीर शहीदों ने अपने प्राणों की आहुति देकर देश को तो आजाद कर दिया किन्तु वास्तविक आजादी हमें कहाँ मिली! चंद मुट्ठी भर लोगों के हाथों में यह आजादी सिमट कर रह गई। गाँधीजी ने कहा था- "आजादी का सही अर्थ तब सामने आयेगा जब देश की सुव्यवस्था की पहचान देश में अरबपतियों और करोड़पतियों की संख्या से नहीं बल्कि आम जनता की भुखमरी के शिकार लोगों की अनुपस्थिति से होगी" लेकिन आज भी देश में भुखमरी के कारण कई लोगों की मृत्यु हो रही है। अमीर और गरीब के बीच जमीन-आसमान का अंतर आ गया है। अमीर और रईस लोग गरीबों को लूटते जा रहे हैं। भ्रष्ट नेता अपने भ्रष्ट कारनामों से

समाज को खोखला कर रहे हैं। भ्रष्टाचार, बेरोजगारी भुखमरी, दुष्कर्म, दहेज प्रथा जैसे बुरे अपराधों से देश दूषित होता जा रहा है। और ये अपराध वीरों के बलिदान एवं तपस्या को नीलाम करती जा रही। यह हम सभी के लिए शर्म की बात है।

लक्ष्मीबाई, कुवँर साहब व तांत्या टोपे जैसे सेनानियों ने आजादी का जो पौधा लगाया, भगत सिंह, चंद्र शेखर आजाद जैसे अमर शहीदों ने अपने लहू से सींचा, जिसे सुभाषचन्द्र बोस जैसे वीर पुरुषों ने अपने त्याग व बलिदान से सँवारा था और जिसे महात्मा गाँधी जी ने अपने कठोर तपस्या एवं त्याग से पाया उस आजादी का मतलब था निस्वार्थ प्रेम। और हम सभी भारतवासियों का फर्ज बनता है कि उनके बलिदान, त्याग और तपस्या को व्यर्थ न जाने दे। और यह तभी संभव है जब देश में बढ़ रही बुराईयों को रोका जाए और देश के लोग धर्म जाति के नाम पर लड़ना छोड़ देश के विकास एवं उन्नति के लिए एकजुट होकर आगे बढ़े।

आइए आज हम विशेषकर उन वीसें वीर शहीदों को याद करे जिनके नाम इतिहास के पन्नों में सुनहरे अक्षरों में लिखा गया है। हम उन्हे शीश झुका कर उनके त्याग एवं बलिदान के लिए नमन करें।

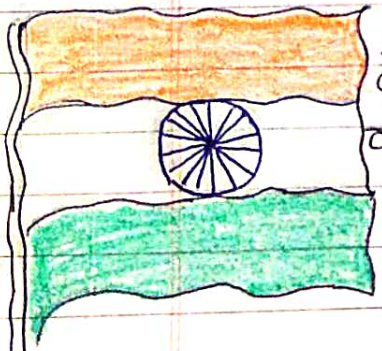

देश भक्तों के बलिदान से, स्वतंत्र हुए हैं हम
कोई पूछे कौन हो तुम ?
तो गर्व से कहेंगे, भारतीय हैं हम।

जय हिन्द ! जय भारत !